REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों के आय एवं स्वास्थ्य का अध्ययन (इन्दौर शहर के विशेष संदर्भ में)

डॉ. बिन्दु महावर
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) , शासकीय कला एवं वाणिज्य (नवीन) ,
महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

प्रस्तावना :-

अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिक प्रदूषित पर्यावरण में कार्य करके कूड़ा–कचरा, कागज, प्लास्टिक, पोलिथिन, भंगार आदि का एकत्रण करके इसे पुनः चक्रण करने में सहायता करके पर्यावरण को स्वच्छ रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते है साथ ही अपशिष्ट एकत्रण करके महिला श्रमिक आय अर्जित करती है। परन्तु इस प्रदूषित पर्यावरण में कार्य करने से महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव होता हैं। यह अध्ययन प्रदूषित पर्यावरण में अपशिष्ट एकत्रण कार्य में संलग्न महिला श्रमिकों पर केन्द्रित है,अध्ययन में इन महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य आय तथा कार्य के घंटों पर प्रदूषित पर्यावरण में कार्य करने के कारण पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही प्रदूषित पर्यावरण में कार्यरत महिला श्रमिकों की समस्याओं के अनेक पहलुओं को व्यावहारिक परिदृश्य में खोजकर इन्हें दूर करने हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

शब्दकुंजी – अपशिष्ट, श्रमिक, पर्यावरण, प्रदूषण, जीवन स्तर.

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों पर केन्द्रित है। अध्ययन हेतु विश्लेषणात्मक पद्धित का प्रयोग करते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से तथ्यों का संकलन किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत में अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों को शामिल किया गया है। द्वितीय संमकों हेतु विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय तथा स्थानीय स्तर पर प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं का उपयोग किया गया है। तत्पश्चात विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग करते हुए निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

शोध उद्देश्य :–

1. महिला श्रमिकों के लिए शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का मूल्यांकन करना।
2. अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रमिकों का पर्यावरण स्वच्छ रखने में योगदान का मूल्यांकन करना।
3. अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य पर प्रदूषित पर्यावरण का प्रभाव ज्ञात करना।
4. अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों के आय स्तर तथा कार्य के घंटों के बीच संबंध ज्ञात करना।

शोध परिकल्पना :–

1. आर्थिक–सामाजिक परिवेश महिला श्रमिकों को प्रभावित करता है।
2. अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रमिकों की आय तथा कार्य के घंटो के बीच कोई संबध नहीं पाया जाता है।
3. अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रमिक अधिक रोगों से ग्रस्त है।
4. अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिक अधिक मधपान का सेवन करती है।

परिणाम एवं विशलेषण

(A) अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों का सामाजिक स्तर :–

1. आयु–अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों में 23 प्रतिशत 15 से 30 वर्ष के आयु समूह में सम्मिलित है। 40 प्रतिशत महिला श्रमिक 30 से 45 वर्ष आयु समूह में शामिल है। 27 प्रतिशत महिला श्रमिक 45 से 60 वर्ष के आयु समूह में सम्मिलित है। एवं महिला श्रमिकों की औसत आयु 41 वर्ष है। इससे स्पष्ट होता है। कि अपशिष्ट एकत्रण कार्य हेतु अनुभव एवं कार्यक्षमता दोनों ही दृष्टिकोण से 30 से 45 वर्ष की आयु श्रेष्ठ है।
2. जातिय स्तर–अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न 88 प्रतिशत महिला श्रमिक अनुसूचित जाति वर्ग की हैं तथा 10 प्रतिशत महिला श्रमिक अनुसूचित जनजातिय वर्ग की है। केवल 2 प्रतिशत महिला श्रमिक पिछड़ा वर्ग से संबध रखती है। इस प्रकार अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न अधिकांश महिला श्रमिक अनुसूचित जाति वर्ग की है।
3. वैवाहिक स्थिति–अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न 71 प्रतिशत महिला श्रमिक विवाहित है। 2 प्रतिशत महिला श्रमिक अविवाहित है तथा 23 प्रतिशत महिला श्रमिक विधवा है एवं 4 प्रतिशत महिला श्रमिक तलाकशुदा है। इस प्रकार अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों में विधवा महिलाओं का भाग अधिक है।
4. अपशिष्ट एकत्रण कार्य में सलंग्न महिला श्रमिकों का शैक्षणिक स्तर तथा परिवार के आकार के मध्य संबंध –

तालिका क्र. 1
शैक्षणिक स्तर तथा परिवार के आकार के मध्य संबंध

स. क्र.	परिवार का आकार → / शैक्षणिक स्तर ↓	0 –4	4 –8	8 से अधिक	योग
1.	निरक्षर	50	23	13	86
2.	साक्षर	07	06	01	14
	योग	57	29	14	100

स्त्रोत – प्राथमिक संमकों पर आधारित

शैक्षणिक स्तर तथा परिवार के आकार के मध्य घनिष्ट संबंध पाया जाता है। शैक्षणिक स्तर व्यक्ति को जागरूक बनाता है जिससे व्यक्ति अपने परिवार के आकार को सीमित रखने के लिए प्रेरित होता है। क्योकि परिवार का आकार बचत एवं पूँजी निर्माण दर को निर्धारित करते है एवं बचत और पूँजी निर्माण की दर आर्थिक विकास को उत्प्रेरित करने का प्रमुख घटक है।

कोई वर्ग परीक्षण :–

इस अध्ययन में काई – वर्ग प्रविधि के द्वारा महिला श्रमिकों के शैक्षणिक स्तर का परिवार के आकार पर प्रभाव की जॉच की गयी है। इस संदर्भ में सारणी क्र. 1 के आधार पर गणना से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1 स्वतंत्रता कोटि के लिए काई वर्ग का सारणी मूल्य 3.841 है, जिससे काई वर्ग का परिगणित मूल्य 1.79581 कम है अतः वास्तविक और प्रत्याशित आवृत्तियों में अंतर नहीं है जो इस तथ्य को दर्शाता है कि दोनों गुणों में स्वतंत्रता है और वे परस्पर संबंधित नहीं है अर्थात यह स्पष्ट होता है कि महिला श्रमिकों की शिक्षा के स्तर का परिवार के आकार पर कोई प्रभाव नहीं है। इस प्रकार विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि शिक्षा का स्तर महिला श्रमिकों के परिवार के आकार को सीमित रखने में सहायक नहीं है। इसका प्रमुख कारण महिला श्रमिकों का शैक्षणिक स्तर का अत्याधिक निम्न होना है।

(B) अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न महिला श्रमिकों के जीवन स्तर संबधित तथ्य :–

1. मकान की संरचना एवं स्थिति–अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न 64 प्रतिशत महिला श्रमिक कच्चे मकानों में रहती है तथा 36 प्रतिशत महिला श्रमिक कच्चे–पक्के मकानों में रहती है। इस प्रकार अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न अधिकांश महिला श्रमिक कच्चे मकान में रहती है। एवं 87 प्रतिशत महिला श्रमिको का स्वंय का मकान है तथा 13 प्रतिशत महिला श्रमिक किराये के मकान में रहती है।

2. पेयजल की व्यवस्था – अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न 68 प्रतिशत महिला श्रमिक सामुदायिक नल से पेयजल प्राप्त करती है एवं 2प्रतिशत महिला श्रमिक हेण्डपंप से पेयजल प्राप्त करती है। तथा 29 प्रतिशत महिला श्रमिक टंकी से पेयजल प्राप्त करती है केवल 1 प्रतिशत महिला श्रमिक स्वंय के नल से पेयजल प्राप्त करती है। इस प्रकार अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न 99 प्रतिशत महिल श्रमिक पेयजल के लिए अन्य स्त्रोतो पर आश्रित है।

3. शौचालय सुविधा – अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न 36 प्रतिशत महिला श्रमिकों के घर में कच्चे शौचालय की व्यवस्था है जबकि 64 प्रतिशत महिला श्रमिकों के घर में शौचालय की सुविधा का अभाव है। इस प्रकार 64 प्रतिशत महिला श्रमिक मूलभूत सुविधा से वंचित है।

4. बिजली की सुविधा – अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न 62 प्रतिशत महिला श्रमिकों के घर एक बत्ती कनेक्शन सुविधा है तथा 38 प्रतिशत महिला श्रमिकों के घर बिजली सुविधा का अभाव है। इस प्रकार 38 प्रतिशत महिला श्रमिक बिजली सुविधा से वंचित है।

5. ईधन की उपलब्धता – अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न 59 प्रतिशत महिला श्रमिक लकड़ी का ईधन के रूप में प्रयोग करती है एवं 36 प्रतिशत महिला श्रमिक केरोसिन तेल का प्रयोग ईधन के रूप में करती है केवल 5 प्रतिशत महिला श्रमिक LPG गैस का प्रयोग ईधन के रूप में करती है।

इस प्रकार जीवन स्तर के सभी सूचकांकों जैसे मकान, पेयजल, शौचालय, बिजली तथा ईधन की उपलब्धता का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि अपशिष्ट एकत्रण में कार्यरत महिला श्रमिकों का जीवन स्तर अत्यन्त निम्न श्रैणी का है।

(c) अपशिष्ट एकत्रण कार्य में सलंग्न महिला श्रमिकों की कार्यदशाऐं –

अपशिष्ट एकत्रण कार्य में सलंग्न महिला श्रमिकों के कार्य की दशाएँ निम्नलिखित तथ्यों के माध्यम से ज्ञात की गई है:–

1. महिला श्रमिक अपशिष्ट एकत्रण का कार्य कहाँ से करती है– अपशिष्ट एकत्रण कार्य में सलंग्न 50 प्रतिशत महिला श्रमिक सड़क से अपशिष्ट एकत्रण का कार्य करती है, 32 प्रतिशत महिला श्रमिक कचरे पेटी से अपशिष्ट एकत्रण करती है तथा 11 प्रतिशत महिला श्रमिक घर–घर जाकर अपशिष्ट एकत्रण करती है केवल 7 प्रतिशत महिला श्रमिक डम्पिंग ग्राउड से अपशिष्ट एकत्र करती है। इस प्रकार अधिकांश महिला श्रमिक अपशिष्ट एकत्रण का कार्य सड़क से करती है।

2. महिला श्रमिक निवास से कितनी दूरी तक अपशिष्ट एकत्रण करने जाते है –

4 प्रतिशत महिला श्रमिक अपशिष्ट एकत्रण करने अपने निवास से 2 की.मी. की दूरी तक जाती है, 25 प्रतिशत महिला श्रमिक अपने निवास से 2 से 4 की.मी. तक अपशिष्ट एकत्रण करने जाती है 32 प्रतिशत महिला श्रमिक अपशिष्ट एकत्रण के लिए 4 से 6 की.मी. की दूरी तक जाती है तथा 39 प्रतिशत महिला श्रमिक अपशिष्ट एकत्रण के लिए 6 की.मी. से अधिक दूरी तक जाती है।

3. महिला श्रमिक माल दुकान तक कैसे ले जाती है – अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न 95 प्रतिशत महिला श्रमिक माल सिर पर रखकर दुकान तक बेचने ले जाती है। 3 प्रतिशत महिला श्रमिक ठेले पर रखकर समान दुकान तक ले जाती है। 2 प्रतिशत महिला श्रमिक ऑटो में रखकर सामान दुकान तक ले जाती है।

4. अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रतिकों के कार्य के घंटे तथा आय के बीच सहसंबध।

तलिका क्र. 2

महिला श्रमिकों के कार्य के घंटे तथा आय के बीच सह संबंध (प्रतिदिन आय रू. में)

स. क्र.	आय का स्तर → / कार्य के घंटे ↓	50 रू. से कम	50 रू. से 100 रू.	100 रू. से 150	150 रू. से अधिक	योग
1.	5 से कम घंटे	04	01	01	–	06
2.	5 से 10 घंटे	14	21	04	–	39
3.	10 घंटे से अधिक	08	29	16	02	55
	योग	26	51	21	02	100

स्त्रोत :– प्राथमिक संमको पर आधारित

श्रमिको की कार्यक्षमता और कार्य के घंटो में घनिष्ट संबंध होता है। श्रमिको की कार्यक्षमता निरन्तर बनाए रखने के लिए कार्य के घंटे और आराम के बीच संतुलन आवश्यक है क्योंकि निरंतर अधिक घंटे कार्य करने से कार्य कुशलता का ह्रास होता है अतः महिला श्रमिकों के कार्य के घंटे जानने का प्रयास किया गया है।

श्रमिकों के कार्य के घंटे तथा आय के स्तर में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है अर्थात कार्य के घंटे अधिक होने पर आय अधिक व कार्य के घंटे कम होने पर आय कम प्राप्त होती है। इस अध्ययन में शामिल महिला श्रमिकों के कार्य के घंटे तथा आय स्तर में सहसंबंध के परीक्षण से प्राप्त परिणाम इस प्रकार है–

अपशिष्ट एकत्रण कार्य में सलंग्न महिला श्रमिकों की आय तथा कार्य के घंटो के मध्य सहसंबध गुणांक के परीक्षण से प्राप्त परिणाम ऋणात्मक (–0.573) है। यह परिणाम इस तथ्य को इंगित करता है कि महिला श्रमिकों की आय तथा कार्य के घंटो के मध्य मध्यम कोटि का ऋणात्मक सहसंबंध है जिसका प्रमुख कारण अपशिष्ट एकत्रण व्यवसाय में संलंग्न महिला श्रमिकों के कार्य की अवधि अधिक व आय कम है।

(D) अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य पर प्रदूषित पर्यावरण का प्रभाव :–

अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रमिक प्रदुषित पर्यावरण में कार्य करती है जिसका इनके स्वास्थ पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसे निम्नलिखित तथ्यों से ज्ञात किया गया है–

(A) अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य का स्तर अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न 87 प्रतिशत महिला श्रमिकों का अस्वास्थ्य है तथा मात्र 13 प्रतिशत महिला श्रमिक स्वास्थ्य है।

तालिका क्र.–3
अस्वास्थ्य महिला श्रमिक कौन–सी बीमारी से ग्रस्त है

स.क्र.	बीमारी (रोग)	आवृति	प्रतिशत
1.	त्पेदिक	13	14.94
2.	खाँसी	24	27.58
3.	त्वचा रोग	31	36.63
4.	ऑखों का रोग	09	10.34
5.	छमा	06	06.89
6.	अन्य	04	04.59
	योग	**87**	**100**

स्त्रोत – प्राथमिक संमको पर आधारित

तलिका से स्पष्ट है कि अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न 15 प्रतिशत महिला श्रमिक तपेदिक रोग से ग्रस्त है, 27 प्रतिशत महिला श्रमिक खाँसी की शिकार है, तथा अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न होने के कारण 36 प्रतिशत महिला श्रमिक त्वचा रोग से ग्रस्त है, 10 प्रतिशत महिला श्रमिकों को ऑखों संबंधित बीमारी है 6 प्रतिशत महिला श्रमिक दमा रोग से प्रभावित है और 4 प्रतिशत महिला श्रमिक अन्य रोगों से पीड़ित है। इस प्रकार अपशिष्ट एकत्रण में कार्यरत अधिकांश महिला श्रमिक किसी न किसी बीमारी से पीढ़ित होकर अस्वस्थ्य है

(B) महिला श्रमिकों का माद्यपान संबंधित विवरण :–

अपशिष्ट एकत्रण में कार्यरत 93 प्रतिशत महिला श्रमिक मधपान का सेवन करती है तथा केवल 07 प्रतिशत महिला श्रमिक किसी भी मादक पदार्थ का सेवन नही करती है।

तालिका क्र.–3
महिला श्रमिक किस मादक पदार्थ का सेवन करती है

स.क्र.	मादक पदार्थ	आवृति	प्रतिशत
1.	तंबाकू गुटका	68	73.11
2.	शराब	12	13.00

3.	नशीली वस्तुएं	07	07.52
4.	अन्य	06	06.45
	योग	**93**	**100**

स्त्रोत– प्राथमिक संमकों पर आधारित

अपशिष्ट एकत्रण में सलंग्न 73 प्रतिशत महिमा श्रमिक तंबाकू गुटके का सेवन करती है, 13 प्रतिशत महिला श्रमिक शराब का सेवन करती है व 7 प्रतिशत महिला श्रमिक नशीली वस्तुओं का सेवन करती है। तथा 6 प्रतिशत महिला श्रमिक अन्य मादक पदार्थो का सेवन करती है। इस प्रकार अधिकांश महिला श्रमिक किसी न किसी मादक पदार्थ का सेवन करती है।

समस्याएँ एवं सुझाव

अपशिष्ट एकत्रण में संलग्न महिला श्रमिक ऐसी स्थिति मे कार्य करने को बाध्य होती है, जो उनके शारीरिक और मानसिक विकास को अवरूद्ध करती है। उपरोक्त अध्ययन के दौरान महिला श्रमिकों से संबंधित निम्नलिखित समस्याऐं उपभरकर सामने आयी है जो इस प्रकार हैः–

1. भारत में विभिन्न उद्योगों में नियुक्त महिला श्रमिकों को सुरक्षा प्रदान करने वाले बहुत से कानून है जैसे – कारखाना एक्ट 1948, खान एक्ट 1952, बागान श्रमिक एक्ट 1951, बीड़ी श्रमिक एक्ट 1966 राष्ट्रीय महिला श्रम नीति 1987 इत्यादि इन कानूनों में महिला श्रमिकों के कार्य के घंटे, मध्यान्तर अवकाश तथा अन्य सुविधाओं का उल्लेख है, परन्तु अधिकांश उद्योगों में यह कानून लागू नहीं होता है। परिणामतः महिला श्रमिकों का शोषण निर्वाध रूप से जारी है।

महिला श्रमिकों के कार्य के दौरान होने वाले शोषण से बचाने के लिए सरकार को कानूनों का विस्तार करके सभी उद्योगो को इनके दायरें में लाना चाहिए एवं कारखाना निरीक्षको द्वारा निरन्तर उद्योगो का निरीक्षण करके महिला श्रम कानूनों का पालन करने हेतु बाधित किया जाना चाहिए।

2. महिला श्रमिक के रूप में कार्य करने के कारण औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाती है और अकुशल तथा अर्द्धकुशल श्रमिक के रू॰ में कार्य करने को बाध्य होती है। सरकार को महिला श्रमिकों के लिए अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए क्योकि शिक्षा और प्रशिक्षण ही वह चाबी है, जो महिला श्रमिकों के लिए सुनहरे भविष्य का दरवाजा खोलती है।

3. महिला श्रमिकों के रूप में कार्यरत अधिकांश महिलाएं मादक पदार्थो का सेवन करने लगती है जैसे – तम्बाकू, गुटका, शराब तथा अन्य नशीली वस्तुऐं आदि यह मादक पदार्थ महिलाओं के शारीरिक विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है एवं अनेक गंभीर बीमारी का शिकार बनाती है।

महिला श्रमिकों को मादक पदार्थो की हानियों से अवगत कराके एवं अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से उक्त बुराई से दूर किया जा सकता है।

4. अपशिष्ट एकत्रण व्यवसाय में सलंग्न महिला श्रमिकों को अनेक बार अपने कार्य के दौरान चोरी के झूठे आरोपों की अमानवीय वेदना झेलनी पड़ती है।

सरकार महिला श्रमिकों को इस मानसिक वेदना से बचाने के लिए परिचय पत्र प्रदान कर सकती है।

5. अपशिष्ट एकत्रण व्यवसाय में संलग्न महिला श्रमिक प्रदूषित पर्यावरण में कार्य करने के कारण अनेक गंभीर बीमारी के शिकार हो जाते है विशेष रूप से तव्चा से संबधित बीमारी, खॉसी, तपेदिक, से यह श्रमिक ग्रसित रहते है। अपशिष्ट एकत्रण व्यवसाय में कार्यरत महिला श्रमिकों को सामूहिक स्वास्थ बीमा अनिवार्य रूप से करवाना चाहिए।

महिला श्रमिकों की इन सभी समस्याओं के लिए देश में अनेक कानून उपलब्ध है, सरकार को इन कानूनों को दृढ़ता से क्रियान्वयन सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है।

उपरोक्त अध्ययन से प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि महिला श्रमिको की समस्या के समाधान हेतु चौतरफा प्रहार करना अत्यावश्यक है जैसे अनौपचारिक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, पूरक पोषण आहार की व्यवस्था, स्वास्थ, बीमा आदि इन उपायों को लागू करके ही सशक्त समाज व राष्ट्र का निर्माण संभव होगा।

REFERENCE –

1. S D Pinekar, S B Deodhar, Mrs. Saraswathi Sankaran " Labour welforw Thade unionism and industrial Relation" leimalaya publishing house, Mumbai – 2003
2. T.M Bhagoliwal Labour Economics.
3. V.C Sinha, labour Economics.
4. DR. Helen R. Sekar " child labour in urban informal sector : A study of Rag pickers in Noida" V.V. giri national labour Institute.
5. Caroline hunt "child waste pickers in india : The occupation and its health hisks- Enviroment and urbanization Vol 8 No. 30 october 1996
6. Kuruve syamala devi, Arza V.V.S. swamy, Ravuri hema krishan "Studies on the solid waste collection by Rag pickers at Hyderabad meonicipal corporation, India International Reserch Jounal of Enviroment sciences vol. 3 (1) 13-22 January 2014.

डॉ. बिन्दु महावर
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) , शासकीय कला एवं वाणिज्य (नवीन) ,
महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.)